OM 6 final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:05 AM Page 4

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान- मैं मास्टर आदि देव हूँ।

मैं ब्रह्मा बाप समान सर्व मनुष्यात्माओं का मास्टर आदि पिता, मास्टर आदि देव हूँ।

- जैसे ब्रह्मा बाबा का हृदय आदि पिता होने के कारण सर्व के लिए सदा शुभ भावना व शुभ कामना से परिपूर्ण रहा... गाली देने वालों को भी उन्होंने गले लगाया... 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:...' इस श्लोक के वे जीवन्त उदाहरण थे... हम भी मास्टर आदि पिता हैं तो फॉलो फादर...।

योगाभ्यास- शिव भगवानुवाच- अ. 'कोई कैसा भी काला कोयला क्यों ना हो,आप उसे चमकता हुआ डायमण्ड देखो। इससे उसका कालापन दूर होता चला जाएगा।'

ब. 'आप शुभचिंतक आत्मायें अपनी शुभ भावना और शुभ कामना की किरणें सूर्य की किरणों मिसल विश्व के चारो ओर फैलाते रहो। यही सहज रूप की मन्सा सेवा है जो चलते-फिरते हर ब्राह्मण आत्मा, अन्जान आत्माओं के प्रति कर सकते हैं।'

स. 'जैसे लाइट हाउस एक ही स्थान पर रहते हुए दूर-दूर की सेवा करता है, वैसे ही आप भी लाइट हाउस, माइट हाउस बन अपनी शुभ भावना व शुभ कामना से विश्व की आत्माओं की सेवा करो।'

धारणा- सर्व के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना

- शुभ भावना और शुभ कामना पुण्य का खाता बढ़ाती है। व्यर्थ भावना, घृणा की भावना वा ईर्ष्या की भावना पाप का खाता बढ़ाती है।

- विश्व महाराजन बनने वाली आत्माओं के पास सर्व शक्तियों का व शुभ भावनाओं का स्टॉक भरपूर होता है।

- 'शुभ भावना और शुभ कामना' - यही सेवा का फाउण्डेशन है।

चिंतन- 'शुभ भावना का गहना - सदा पहने ही रहना'

- हमारे मन में सदा सर्व के लिए शुभ भावना और शुभ कामना कैसे रहे?

- दूसरों के लिए शुभ भावना कहाँ नहीं रह पाती?

- हमारी शुभ भावना से हमें और दूसरों को क्या फायदा होता है?

तपस्वियों प्रति- प्रिय तपस्वियों! प्यारे बाबा के महावाक्य हैं कि जैसे बीज में सारे वृक्ष का सार भरा हुआ होता है, ऐसे आपके हर संकल्प रूपी बीज में शुभ भावना, कल्याण की भावना, निर्बल को बलवान बनाने की भावना, दु:खी या अशान्त को स्वयं की प्राप्त की हुई शक्तियों के आधार से सदा सुखी, शान्त बनाने की भावना अर्थात् यह सार भरा हुआ हो। तब कहेंगे बाप समान विश्व कल्याणकारी, मास्टर आदि देव आत्मा।

स्वमान - मैं हिम्मत व उमंग-उत्साह से भरपूर आत्मा हूँ।

उड़ती कला के दो पंख हैं-हिम्मत और उमंग-उत्साह। जहाँ उमंग-उत्साह है वहाँ कोई भी कार्य असम्भव नहीं। यदि उमंग-उत्साह की कमी है तो हर कार्य में थकावट की अनुभूति होगी।

धारणा- उमंग-उत्साह। संगमयुगी ब्राह्मण जीवन अर्थात् उमंग-उत्साह से सम्पन्न जीवन।

उमंग-उत्साह कम होने का कारण- 1. दूसरों की कमी-कमज़ोरी को देखना और स्वयं में धारण करना। 2. आलस्य-अलबेलापन। आज का काम कल पर छोड़ने के संस्कार। 3. सदा याद रखना है कि जो करना है वह अभी ही करना है... शुभ कार्य में देरी नहीं करनी है। 4. सदा अपने श्रेष्ठ स्वमान में रहें... अपनी शक्तियों तथा महानताओं को स्मृति में रखें। 5. किसी भी कार्य के लिए यह नहीं सोचें कि मुझसे अच्छा यह कार्य दूसरा कोई नहीं कर सकता। आत्मविश्वास के साथ किसी भी कार्य को आरंभ करें और अंदर से निश्चय रखें कि सफलता हुई पड़ी है।

उमंग-उत्साह में रहने से फायदे- 1. उमंग-उत्साह वाला सदा खुशी में नाचता रहेगा... उसको सदा सभी का सहयोग भी मिलता रहेगा। 2. जहाँ उमंग-उत्साह है वहाँ कोई कार्य में मुश्किल अनुभव नहीं होगा। हर कार्य में सफलता की प्राप्ति होती रहेगी। 3. उमंग-उत्साह है तो जीवन में आनंद है, वहाँ नई-नई प्रेरणाएं आती रहती हैं। 4. जहाँ उमंग-उत्साह है वहाँ कैसी भी परिस्थिति हो सहज ही पार हो जाती है। 5. उमंग-उत्साह वाले कभी थकावट की महसूसता नहीं करते। आलस्य-अलबेलापन उन्हें संकल्प में भी नहीं आ सकता।

साधकों प्रति- सदा उमंग-उत्साह से आगे बढ़ें क्योंकि विश्व की निगाहें आपके ऊपर हैं... आपके उमंग-उत्साह से अनेक आत्माओं में उमंग-उत्साह की लहर फैलेगी।

अभिलाषा सशक्त मन की

सरल जीवन की अभिलाषा एक सुखद जीवन का एहसास है, इसलिए मन की अभिलाषा इससे अलग नहीं हो सकती, लेकिन यह जीवन सरल उसके लिए होता है जिसका मन सशक्त हो। सशक्तता ही मनुष्य के जीवन को सरल बना सकती है। चुनौतियों को अवसर में बदलना एक हुनर है, जो मन से मजबूत है वही इस हुनर को जानता है।

चुनौतियां कष्ट-कारक हैं। ये दर्द अपने साथ लाती हैं। दर्द बर्दाश्त करना है, इसके अलावा कोई विकल्प नहीं है। सीधा-सा समीकरण है, जीवन है तो चुनौतियां हैं और चुनौतियां हैं तो दर्द है, लेकिन क्या हर वो दर्द जो चुनौती अपने साथ लेकर आता है, इतना ही पीड़ादायक होता है कि बर्दाश्त करना पड़े? नहीं। उसे महसूस करना और गहराई में उतारना हमारे मन पर निर्भर करता है। दर्द अपरिहार्य है, जबकि उसकी पीड़ा का एहसास वैकल्पिक है। यह आपका चयन है कि आप एहसास को अपनाएं या अनदेखा करें। ईमानदारी से सोचें, क्या आप अपने हर दर्द को महसूस करते हैं? एक बच्चा जब साइकिल सीखते वक्त गिरता है तो दर्द क्यों नहीं महसूस करता? क्योंकि वह उस दर्द को स्वीकारता है। वह जानता है कि दर्द, सीखने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। इसी तरह ज़िन्दगी में कुछ भी सीखना है तो इसके दर्द को भी अनदेखा करना होगा। दर्द महसूस किए बिना अनवरत लगे रहना होगा - बिना किसी निराशा के, बिना किसी शिकायत के।

पीड़ा को गले लगाओ तो उसकी कचोट का एहसास नहीं होगा। फिर सुनो वह क्या करता है। उसकी आहट को पहचानो।

उसकी बातों में गहनता है, एक अर्थ छुपा है। दर्द के प्रति आपकी स्वीकारोक्ति, संवाद की शुरुआत है। वेदना से संवादहीनता यानी वेदना को पुनर्निमंत्रण। अत: समझदार निर्णय यही है कि पहली बार में ही उसके संदेश से परिचय स्थापित कर लें। मुकाबला मत करो। ध्यान संदेश पर केंद्रित होगा तो उसके शब्दों की गूंज सुनाई देगी। वेदना, जीवन का पाठ अपने सहज शब्दों में पढ़ती जाएगी। वह कराह में तभी परिवर्तित होती है जब संदेश उपेक्षित होता है।

इससे पहले, कि त्रुटियां अपरिमित विस्तार पा लें - वेदना की आवाज़ सुन लो, समय रहते अपनी त्रुटियों को संशोधित कर लो - जीवन सरल बन जाएगा और आप सशक्त। -ब्र.कु. निशा

चरित्रवान बच्चे...

- पेज 1 का शेष...

भविष्य निर्माण की पहली सीढ़ी कहा जाता है। आज देश को चरित्रवान युवा कर्णधारों की आवश्यकता है जो देश को आगे बढ़ा सकें। इस दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किया जा रहा प्रयास बहुत ही सराहनीय है। यह एकमात्र संस्था है जो बच्चों में चरित्र निर्माण का कार्य कर रही है। ब्रह्माकुमारीज़ के सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक ब्र.कु. करुणा ने कहा कि देश का विकास चरित्रवान बच्चों से ही होगा। इस शिविर को शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय, शांतिवन के प्रबंधक ब्र.कु. भूपाल, शिक्षा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. डॉ. हरीश, ब्र.कु. मुन्नी सहित अनेक वक्ताओं ने सम्बोधित किया।

काठमाण्डू-नेपाल। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् नेपाल के महामहिम उप-राष्ट्रपति परमानंद झा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. राज।

नई दिल्ली। भारत के नए रेलमंत्री सदानंद गौड़ा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मृत्युंजय, जस्टिस वी.इश्वरैय्या, ब्र.कु.सेविका।

नगर-भरतपुर(राज.)। श्रीराम रथ यात्रा मेले में 'शिवदर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का उद्घाटन करते हुए भरतपुर सम्भाग के आयुक्त ओ.पी. सैनी, ब्र.कु. हीरा, ब्र.कु. संध्या, ब्र.कु. नीरेश, पालिका अध्यक्ष रमन लाल सैनी तथा अन्य।

तालापारा-बिलासपुर। 'आनंदमय जीवन' शिविर का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. नारायण, ब्र.कु. रमा तथा अन्य।

बिलासपुर-छ.ग.। नव निर्वाचित विधायक दिलीप लहरिया को सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञान चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजकुमारी। साथ हैं ब्र.कु. शशि तथा अन्य।

दिल्ली-करोल बाग। विद्या पब्लिक स्कूल कनॉट प्लेस में नैतिक मूल्यों के बारे में बताते हुए ब्र.कु. विजय। साथ हैं श्रीमती कमलेश माटा, शिक्षकगण तथा सभी विद्यार्थी।